# INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

**ISSN 2319 – 9202**

*An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal*

**WWW.CASIRJ.COM**
**www.isarasolutions.com**

Published by iSaRa Solutions

# 1857 की क्रान्ति व जनपद–लखीमपुर खीरी

डॉ0लवकेश कुमार तिवारी

19 वीं शताब्दी का छठा दशक भारतीय इतिहास में एक युगान्तकारी घटना का परिचायक रहा है। यह वही समय था जब ब्रिटिश नीतियों से भारतीय जनमानस के सभी पक्ष मानसिक, शारीरिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से बुरी तरह आहत थे, व समस्त उत्तर भारत के क्रान्तिकारी वीरों ने अपनी भुजाओं की एकता का एहसास अंग्रेजी हुकूमत को कराकर भारत माता की पैरों की बेड़ियों काटने का प्रयास किया था। इस परिपेक्ष्य में 29 मार्च 1857[1] ई0 को बैरकपुर छावनी (बंगाल) में मंगल पाण्डे ने अपने अंग्रेज अधिकारियों की गोली मारकर हत्या कर दी, एवं यह छोटी सी चिंगारी आने वाली बड़ी क्रान्ति की शुरूआत करने वाली निर्णायक घटना सिद्ध हुयी।
मेरठ के वीर सैनिक सपूतों ने 10 मई 1857 ई0 को जिल्लत का चोंगा उतार फेंका व अपने अंग्रेज अफसरों की हत्या कर सन् 1857 ई0 की क्रान्ति की शुरूआत कर[2] दी।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्फुटित इस महा आंदोलन में खीरी जनपद के समस्त जनमानस ने, राजा से रंक तक, अपनी भूमिका का सकारात्मक तरीके से निर्वाह किया। खीरी परिक्षेत्र में गदर का नेतृत्व मुख्यतः छोटी–छोटी रियासतों के असन्तुष्ट राजाओं ने ताल्लुकदारों की सहायता से किया व राष्ट्रव्यापी गदर ने अंग्रेजों के लिए गंभीर सैनिक समस्याओं का सूत्रपात भी किया। परंपरागत रूप से बहादुर, स्वाभिमानी, लड़ाकू, जुझारू व आजादी प्रेमी खीरी क्षेत्र इस बार राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हो युद्ध की भूमि पर प्राण न्योछावर कर अंग्रेजी सत्ता को नष्ट करने के लिए पूर्णतः तैयार हो गया। आजादी की इस संघर्षपूर्ण स्थिति में खीरी जनपद में अंग्रेजों के साथ युद्ध के मैदान में दुश्मनी व शरणागत की सुरक्षा की परंपरागत स्थिति को भी बनाये रखा इसका एक अप्रतिम उदाहरण राजा लोने सिंह (मितौली) ने दिया। जब कदर की शुरूआत के बाद अपने क्षेत्र के भयभीत ब्रिटिश परिवारों को उनके द्वारा राजनैतिक संरक्षण प्रदान किया गया था।

वर्ष 1856 ई0 में अवध के अंग्रेजी साम्राज्य के अधिग्रहण के साथ अवध के नवाबों की राजनीतिक सत्ता का पतन हो गया, व खीरी क्षेत्र की स्थानीय शक्तियों का भविष्य का सूरज भी डूब गया। नई अंग्रेजी व्यवस्था के अंतर्गत मोहम्मदी को ब्रिटिश सत्ता का स्थानीय केन्द्र बनाया गया। मई क्रान्ति की आग शीघ्र ही अवध के विभिन्न क्षेत्रों में फैल गयी तथा 31 मई 1857 ई0 को स्थानीय क्रान्तिकारियों ने शाजहाँपुर को अंग्रेजी नियंत्रण से मुक्त करा लिया। शाहजहाँपुर के अंग्रेज अधिकारी मिस्टर जेकिन्ग के नेतृत्व में भागकर पुवाँया के राजा के पास शरणागत हो गये[3], भारतीय परंपरा का अनुपालन करते हुए पुवाँया के राजा के आग्रह पर मितौली के राजा लोने सिंह ने अंग्रेजी परिवारों की सुरक्षा का बीड़ा उठाया तथा शरणागत अंग्रेजी परिवारों को सम्मान सहित निकट के कचियानी गाँव में रहने की व्यवस्था कर दी[4]। राजा लोने सिंह ने अंग्रेजी परिवारों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद सरकारी खजाने को मोहम्मदी के किले में स्थानान्तरित कर दिया गया। 4 जून 1857 ई0 को अंग्रेजी सेना ने राजकोष के साथ बरबर में आकर डेरा डाल दिया। 5 जून को स्थानीय सैनिकों की टुकड़ियों ने हमलाकर सरकारी राजकोष को अपने नियंत्रण में कर लिया[5]। इस संघर्ष में 1 लाख 10 हजार रूपये अंग्रेजी राजकोष से प्राप्त हुए[6]। विद्रोही सेनाओं के इस तेवर से अंग्रेज भयभीत हो गये और अन्ततः उन्होने मोहम्मदी छोड़ने का निश्चय किया।

खीरी परिक्षेत्र में चारों ओर अंग्रेजी सत्ता के पैर उखड़ चुके थे। इसी प्रक्रिया में दक्षिण सीतापुर में भी अंग्रेजी सत्ता जून 1857 ई0 में दम तोड़ चुकी थी। सीतापुर प्रशासन सर्वोच्च अधिकारी माउण्ट स्टूवर्ड अपनी जान बचाने हेतु भागने पर मजबूर हो गये थे, तथा उन्होने भी राजा लोने सिंह के पास शरण की गुहार लगायी जैकशन की सुरक्षा का प्रबंध कछियाने गाँव में कर दिया गया। राजा लोने सिंह इस समय दोहरी मानसिक द्वन्दता का सामना कर रहे थे, जहाँ एक ओर अंग्रेज विरोधी जन भावना के कारण जनता आन्दोलित हो रही थी वहीं दूसरी ओर शरणार्थियों की सुरक्षा का धर्म भी समान रूप से सम्पादित कर रहे थे[8]। समय की आवश्यकता को समझते हुए अन्त में राजा लोने सिंह ने समस्त शरणार्थी अंग्रेजों को 25 अक्टूबर 1857 ई0 को लखनऊ भेजने की व्यवस्था कर दी थी।

1857 ई0 के अन्त तक समस्त खीरी परिक्षेत्र से अंग्रेजी सत्ता के केन्द्रों को नष्ट कर दिया गया तथा अंग्रेजों का यह मिथक कि वे अजेय हैं, ताश के पत्ते की तरह ढह गया। सितम्बर 1857 ई0 दिल्ली के पतन के बाद अंग्रेजों ने एकबार पुनः उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर अपना राजनैतिक नियंत्रण स्थापित करना शुरू कर दिया था जिसमें फलस्वरूप वर्ष 1857 ई0 के मध्य से क्रान्तिकारी सेनाओं की सफलता का सैलाब खीरी क्षेत्र में भी थमने लगा था। हालांकि उत्तर भारत के गदर के विभिन्न केन्द्रों के पतन के बाद अनेक योद्धाओं ने लखीमपुर क्षेत्र में आकर क्रान्तिकारी सेना के साथ सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया था इसी श्रेणी में पेशवा नाना साहब के विषय में अंग्रेजी सत्ता को जानकारी मिली कि उन्होने खीरी जनपद से सहायता प्राप्त करने हेतु 19 मार्च 1858 ई0 को इस क्षेत्र का दौर किया था[10]। नाना साहब की खीरी क्षेत्र में उपस्थिति यह परिलक्षित करती है कि खीरी के योद्धाओं व उनकी जुझारू क्षमता का लोहा उत्तर भारत के समस्त विद्रोही नेता स्वीकार करते थे।

1857 ई0 के गदर में लखनऊ के पतन के बाद विद्रोहियों का एक बड़ा समूह खीरी जनपद में अपनी सेवायें देने के लिए उपस्थित था। इसी परिपेक्ष्य में अंग्रेजी सत्ता का मुख्य केन्द्र फतेहगढ़ से 30 अप्रेल 1858 ई0 कॉलिन कैम्बेल ने शाहजहाँपुर पर अधिकार कर लिया[11]। जिसपर अहमदुल्लाशाह ने 1857 ई0 के मध्य से ही अपना नियंत्रण बनाया हुआ था। ब्रिटिश सेना की शक्ति का एहसास होते ही विद्रोही आस–पास के जंगलों में छिप गये, स्थानीय मितौली के राजा लोनेसिंह ने अहमदुल्लाशाह की सैनिक व आर्थिक मदद की जिसके फलस्वरूप शाहजहाँपुर पर एकबार पुनः विद्रोहियों ने अधिकार करने का प्रयास किया परन्तु उन्हे आशानुरूप सफलता प्राप्त न हो सकी[12]। स्थानीय पुवाँया के राजा ने एक षडयंत्र के द्वारा 5 अक्टूबर 1858 ई0 को मौलवी अहमदुल्लाशाह की हत्या करवा दी।

शाहजहाँपुर का पतन स्थानीय क्रान्तिकारियों के लिए एक बड़ा झटका था। तदोपरान्त अंग्रेजी सैनिक टुकड़ियों ने मितौली के राजा लोने सिंह जो कि स्थानीय गदर के एक प्रतीक के रूप में स्थापित हो चुके थे, के ऊपर दबाव बनाने का प्रयास शुरू कर दिया राजा लोने सिंह के किले को घेर लिया गया, तथा तोप के गोलों की तब तक बारिश की गयी जब तक राजा लोने सिंह का किला ध्वस्त न हो गया। राजा लोने सिंह अपने समस्त परिवार के साथ इस संघर्ष में शहीद हो गये। लोने सिंह के पतन के बाद धीरे–धीरे अंग्रेजों ने खीरी क्षेत्र में अपनी पकड़ मजबूत करनी शुरू कर दी तथा 1858 ई0 की समाप्ति तक इस क्षेत्र को अपने राजनीतिक प्रभाव में लाने में पूर्ण रूप से सफल हो गये। निश्चित रूप से 1857 ई0 के गदर में भारतीय वीरों को सफलता नहीं मिल पायी परन्तु गैर बराबरी के संघर्ष में उनके द्वारा किये गये त्याग व समर्पण के साथ–साथ जिस शौर्य व वीरता का प्रदर्शन किया गया वह आने वाली पीढ़ियों के प्रेरणा के रूप में कार्य

करती रहेंगी। इसी सन्दर्भ में खीरी परिक्षेत्र के रणबांकुरों के द्वारा दिये गये बलिदान को भी हमेशा याद किया जायेगा। खीरी परिक्षेत्र में आज भी सन् 57 की क्रान्ति की विभिन्न

प्रतीक विद्यमान हैं तथा स्थानीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के द्वारा इस गदर के वीरों को समय–समय पर याद करने का कार्य स्थानीय जनता के द्वारा किया जाता है। हालांकि राष्ट्रीय स्तर पर जो स्थान खीरी जनमानस को सन् 57 के गदर में दिये गये योगदान के लिए प्राप्त होना चाहिए अभी भी यह अपने उस स्थान की प्रतीक्षा कर रहा है। स्थानीय स्तर के शोधकर्ताओं के द्वारा लगातार शोधकार्य करते हुए खीरी क्षेत्र के योगदान को 1857 ई0 के गदर के परिपेक्ष्य में स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली तथा राज्य अभिलेखागार उ0प्र0 विभिन्न प्रकार के स्रोत रिपोर्ट व सरकारी दस्तावेज एक निर्णायक भूमिका लखीमपुर के 1857 ई0 के गदर में स्थान को स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं।

## सन्दर्भ–सूची

(1) विक्की पीडिया.ऑर्ग
(2) उपरोक्त
(3) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, सूचना विभाग पृ. (क)।
(4) प्रकाश, ओम उ0प्र0 डिस्ट्रिक गजेटियरस–खीरी, उ0प्र0 1979, पृ. 31।
(5) उपरोक्त।
(6) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, सूचना विभाग पृ. 2।
(7) उपरोक्त।
(8) उपरोक्त।
(9) प्रकाश, ओम उ0प्र0 डिस्ट्रिक गजेटियरस–खीरी, उ0प्र0 1979, पृ. 32।
(10) उपरोक्त।
(11) उपरोक्त।
(12) उपरोक्त।
(13) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, सूचना विभाग उ0प्र0 (घ)।

## ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

# MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

## PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

**भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध**

**ISSN 2321 – 9726**

**WWW.BHARTIYASHODH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

**ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)**

**WWW.IRJMST.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

**ISSN 2319 – 9202**

**WWW.CASIRJ.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

**ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)**

**WWW.IRJMSH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

**ISSN 2454-3195 (online)**

**WWW.RJSET.COM**

**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

**ISSN 2582-5445**

**WWW.IRJMSI.COM**

**JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH**

**WWW.JLPER.COM**